

Ms. 51569 L. 51579





51569 to 51599























॥ श्रीहरिः ॥ शरणागतनीतिनिवृत्तिपरं  
 ॥ परपङ्क्तमोनिकरांशुनिधि ॥ निधि  
 सेवितपादसरोजयुगं ॥ युगधर्मनिव  
 र्त्तककालकरं ॥ करजो हितस्वितप्र  
 मर्दौघकुंच ॥ कुंचकुंकुमलिपत्रं यशो  
 हृदयं ॥ हृदयस्थितगोकुलवासिजनं  
 ॥ जनसंचिन्तप्रपुण्यचरैकफलं ॥ फ  
 लदानपरात्तिममर्षिचुजं ॥ चुजं



ग्रा०  
२०२

५५५

उग्रहीतकुचाग्रमणिं ॥ मणिशोचिन्न  
हस्तधृतादिवरं ॥ वरगोपवधूचयसं  
वृत्तितं ॥ वलितप्रमदायुत्तरासकरं  
करपद्मगुगाहितवेणुवरं ॥ वरचक्रि  
सिरस्थितिपद्मकरं ॥ करमर्दितयाद  
वयूष्यरिपुं ॥ रिपुयूष्यचुजंगद्वर्षहरं  
हरपूजितरम्पसारोजपदं ॥ पदप्रस  
युगार्चनदत्तपदं ॥ पदपद्मनखस्थि



ति न क्रि रसं ॥ रस प्ररित गो प बद्ध शर  
 णं ॥ शर एण गत धो म ज ना न य दं ॥ न  
 य दौ द्य शि रो हर ख र्द्ध धरं ॥ धर एणी क्त  
 पु एण च ये क फ लं ॥ फ ल हे तु वि म दि  
 त तु ह्म ख रं ॥ ख र मु क्ति द या द स रोज  
 वं ॥ वर बर्हि शि ख रं ड क यु क्त क चं  
 क च पा त्र नि वै शि त पु ष्य च यं ॥ धो म  
 धि प ति क म ला धि प ति ॥ ब र्दे त म हं म



आ०  
२०३

पुराधीशं ॥ १॥ इति श्रीवह्मनाचार्य  
विरचितं गार्ग्यसमाप्तः ॥ श्रीहरिः ॥  
नवांबुदानीकमनोहराय प्रफुल्लरा  
जीवविलोचनाय ॥ वेणुस्वर्णमौद  
तगोपीकुलाय नमोस्त गोपीजनव  
हन्नाय ॥ १॥ किरिकेयुरविन्द  
नाय जैवेयमात्महिरंजिताय ॥  
स्फुरच्चलत्काचनकुण्डलाय नमोस्त

51594







































